लक्ष्मीकांत वर्मा की काव्यगत विशेषताएँ

(बी. ए. द्वितीय वर्ष, हिंदी प्रतिष्ठा, पत्र-4)

डॉ. बिभा कुमारी

(विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर, ल.ना.मि.वि.वि.)

कवि लक्ष्मीकांत वर्मा का जन्म बस्ती (उ.प्र.) में 1922 में हुआ इन्होंने कविता सहित अनेक विधाओं में लेखन किया है। इनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं-

'नए प्रतिमान' 'आदमी का जहर' 'धुएँ की लकीरें' 'सीमांत के बादल' तथा 'अतुकांत'

इनकी कविताओं में मानव के खंडित व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने की कोशिश की गई है-

"एक दर्द और कई सीमाएँ

हाँ

यह मैं हूँ

अकेला राहगीरों से अलग

मगर

मेरे साथ भी एक कारवां है

जिसे तुम कभी नहीं देखोगे।"

कवि होने के साथ-साथ इन्होंने कई अन्य विधाओं में लेखन किया। इनका काव्य आम व्यक्ति की दिनचर्या को व्यक्त करता है। ये ज़मीन से जुड़े हुए बेहद संवेदनशील रचनाकार हैं। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रभाव इनके काव्य पर दिखाई पड़ता है। ये जितने संवेदनशील कवि हैं उतने ही विचारवान निबंधकार भी हैं। साथ ही उच्चकोटि के समीक्षक हैं। कथाकार, नाटककार होने के साथ-साथ कुशल संपादक भी हैं। हिंदी, उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित हैं।

'नयी कविता' प्रयोगवाद के बाद का दौर था। इस दौर में भावपक्ष एवं शिल्प पक्ष में अनेक नवीनताएँ देखी जा रही थी। 'नयी कविता' के इस दौर में लक्ष्मीकांत वर्मा सबसे अलग पहचान रखते हैं। 'रूबरू' इनकी काव्य-यात्रा की अंतिम कृति है। जैसा कि सर्वविदित है लक्ष्मीकांत वर्मा अनेक विधाओं में लिख रहे थे, परंतु काव्य में उनका सर्जनात्मक व्यक्तित्व सर्वाधिक गहराई और व्यापकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। 'नयी कविता' के दौर में उनकी अनेक कविताएँ प्रकाशित हुईं। अपनी कविताओं के संबंध में उन्होंने कहा है-

" इन कविताओं के विषय में मुझे इतना ही कहना है यह मेरी व्यक्तिगत अनुभूतियों का संग्रह है। कहीं-कहीं इसमें पूरा परिवेश हमारे साथ रहा है, कहीं-कहीं मैं बिल्कुल अकेला रह जाता हूँ, वहाँ किसी को दोषी नहीं ठहराता क्योंकि

अंततोगत्वा सब छूट जाते हैं। केवल कवि का व्यक्तित्व और स्थितियों का गहनतम दबाव यही दो शेष बचते हैं। उस साक्षात्कार की अभिव्यक्ति कठिन है और जटिल भी और वही कवि के व्यक्तित्व की परख भी होती है।"

उन्होंने स्वयं कवि के व्यक्तित्व के परख के लिए जिस कसौटी की चर्चा की, उस पर अपने काव्य को भी आजीवन कसते रहे।

उनका सृजनशील मन सकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ है। वे घिसी-पिटी बातों को स्वीकार करने के पक्ष में कभी दिखाई नहीं देते हैं। वह देश के स्वतंत्र हो जाने मात्र से संतुष्ट नहीं थे। उन्हें सामाजिक विषमता को दूर करने की चिंता थी। वे समाज में समरसता चाहते थे, समानता चाहते थे, इसके लिए निरंतर प्रयासरत भी रहे। इलाहाबाद में 'परिमल' संस्था से जुड़े रहे।

'नयी कविता' पत्रिका में इनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

उनके काव्य की कसौटी जितना जीवन और काव्य को एक करती थी, उतनी ही सख्ती से हर कवि को उस पर कसती भी थी, यहाँ तक कि स्वयं उन्हें भी। उनकी कसौटी रही – आत्मसाक्षात्कार की।

चाहे हम 'अतुकांत' की कविताओं को देखें या 'तीसरा पक्ष' अथवा उनके परवर्ती लेखन के दौर की 'दीप देहरी द्वार' की कविताओं को। सबसे बड़ी कसौटी उनके लिए आत्मसाक्षात्कार की ही कसौटी रही।

आरंभिक दौर की कविताओं में उनकी अनुभूतियां, उनके अभावों, संघर्षों और पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक कठिनाइयों में से उपजती थीं।

-" कडुआहट अपने में ही एक अर्थ है

संभाव्य है उस संतुलन का

जिसकी अभिव्यक्ति

एक नयी अभिरुचि में

अवतरित हो

हमें परिशोधित संदर्भों से जोड़ती है"

इनके आरंभिक दौर की कविताओं में आत्म परिशोधन, आक्रोश और पीड़ा की छटपटाहट थी। धीरे-धीरे इनकी काव्य-संवेदना अधिक व्यापक रूप लेती है। हर शोषण व असमानता को दूर करने के लिए वे वंचितों, पीड़ितों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। लक्ष्मीकांत का जीवन एक तपस्वी का जीवन रहा है –

"इसी असंभव को संभव बनाने में

बूँद बूँद 'रक्तदान' करते रहे।"

यानि वही लक्ष्मीकांत जो बड़े-बड़े युद्ध शिविरों में पराजित नहीं हुए पर अपनी ही अपराजेय विवशता में समूचे चूर-चूर होकर भी साबुत बचे रहे। लक्ष्मीकांत वर्मा का काव्य 'नयी कविता' के दौर में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।